

16

उत्तराखण्ड शासन

भाषा विभाग

संख्या: ५६५ / xxxix / १३-३५(सा०) / २०१२

देहरादून, दिनांक ३१ मई, २०१३

विनियम / विविध

राज्यपाल, उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की नियमावली, 2009 के नियम 2(10) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करके उत्तराखण्ड भाषा संस्थान में मौलिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु, उत्तराखण्ड की लोक भाषा की विविध विधाओं में साहित्य / काव्य सृजन हेतु लोक भाषा में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से निम्नवत् उत्तराखण्ड लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार विनियम बनाये जाने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

उत्तराखण्ड लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार विनियम, 2013

संक्षिप्त नाम :

- 1.(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम "उत्तराखण्ड लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार विनियम, 2013" है।
- (2) यह तुरन्त प्रवृत्त होगी।

परिभाषाएं : इन विनियमों में जब तक कि सन्दर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो-

- 2.(1) "योजना" से, "लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना" अभिप्रेत है;
- (2) "पुस्तक" से प्रकाशित पुस्तक, "लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार विनियम" अभिप्रेत है;
- (3) "विनियम" से "लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार विनियम" अभिप्रेत है;
- (4) "वर्ष" से किसी वित्तीय वर्ष की पहली अप्रैल से प्रारम्भ होने वाली बारह मास की अवधि" अभिप्रेत है;
- (5) "पुरस्कार" से कमशः "गुमानी पन्त, गोविन्द चातक, गिरीश तिवारी "गिर्दा", अबोध बन्धु बहुगुणा तथा भजन सिंह "सिंह" पुरस्कार" अभिप्रेत है;

उद्देश्य : 3. योजना का उद्देश्य लोक भाषा में मौलिक रूप से उच्च स्तर के साहित्य के सृजन को प्रोत्साहन देना है। इन विषयों में समसामयिक विषय भी सम्मिलित किये जा सकते हैं।

म्

पुरस्कार : 4. उपरोक्त वर्णित पुरस्कारों को लोक भाषाओं में मौलिक पुस्तक लेखन के अन्तर्गत रूपये एक लाख, प्रमाण पत्र, स्मृति चिह्न प्रदान किया जायेगा।

अवधि : 5. योजना के अन्तर्गत पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले तीन वर्षों में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति, मौलिक पुस्तक लेखन के लिये प्रत्येक वर्ष उपरोक्त वर्णित पुरस्कार होंगे।
उदाहरणः— 2012 के लिये पुस्तक चयन के लिये 2008–2010 के मध्य प्रकाशित पुस्तकें ही विचारणीय होंगी।

साहित्य की विविध विधाओं के अन्तर्गत उपरोक्त वर्णित पुरस्कार के लिये पात्रता :

6. (1) पुरस्कार के विचारार्थ होने के लिये पुस्तक का लोक भाषा तथा साहित्य में विशिष्ट स्थान होना चाहिये। पुस्तक सृजनात्मक या समालोचनात्मक हो, किन्तु निम्नलिखित में से किसी भी श्रेणी की नहीं होनी चाहिए।

(क) अनुदित कृति, अथवा

(ख) संचयन, अथवा

(ग) संक्षिप्त या संकलन या टीका, अथवा

(घ) विश्वविद्यालय या परीक्षा की उपाधि के लिये तैयार किया गया प्रबन्ध या शोधकार्य अथवा

(ड) ऐसे लेखक की कृति, जिस पर संस्थान से (अनुवाद पुरस्कार के अतिरिक्त) पहले भी पुरस्कार मिल चुका है अथवा

(ज) ऐसा लेखक जो संस्थान में चयन मंडल का सदस्य है।

(2) पूर्व प्रकाशित पुस्तकों की स्वचनाओं से तैयार नया संग्रह अथवा पूर्व प्रकाशित पुस्तकों के संशोधित संस्करण पुरस्कार हेतु विचारणीय नहीं होंगे, तथापि पुस्तक में शामिल रचनाओं का 75 प्रतिशत भाग यदि पहली बार प्रकाशित हुआ है तो उस स्थिति में वह पुस्तक पुरस्कार हेतु विचारणीय हो सकती है।

(3) कोई अपूर्ण कृति पुरस्कार हेतु विचारणीय हो सकती है यदि पुस्तक में सम्मिलित भाग अपने आप में पूर्ण है।

(4) यदि लेखक की मृत्यु पुरस्कार के लिये निर्धारित तीन वर्ष के भीतर या उसके बाद हुई हो तो लेखक की मृत्यु के बाद प्रकाशित कृति पुरस्कार के लिये विचारणीय होगी।

उदाहरण : यदि लेखक का मृत्यु वर्ष 2008 से पूर्व की हो, उस स्थिति में उसकी कृति वर्ष 2012 के पुरस्कार हेतु विचारणीय नहीं होगी।

(5) ऐसी पुस्तक, जिसके संबंध में चयन समिति/मूल्यांकन समिति/पुरस्कार परामर्श मंडल/जूरी को विश्वास हो जाये कि

उसे पुरस्कार दिलाने के लिये पक्ष में समर्थन जुटाया गया है, पुरस्कार के लिए अहं नहीं होगी।

- (6) यदि किसी वर्ष मूल्यांकन समिति इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि प्रविष्ट पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक किसी भी प्रकार के अहं नहीं है तो इस संबंध में उसका निर्णय अंतिम माना जायेगा।
- (7) यदि पुरस्कार के लिये चुनी गई पुस्तक के लेखक एक से अधिक होंगे, तो पुरस्कार की राशि उनमें बराबर-बराबर बांट दी जायेगी।
- (8) ऐसी पुस्तकें जिन्हें इन विनियमों में उल्लिखित पुरस्कारों से इतर कोई अन्य पुरस्कार प्राप्त हो गया है, इस योजना के अन्तर्गत पुरस्कार के लिये अहं नहीं मानी जायेगी।

लोकभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कारों के लिये अंक तालिका :
7. हिन्दी में पुस्तक लेखन के लिए निम्नवत् अंक प्रदान किये जायेंगे:-

क्र. स.	मद	अंक
1	मौलिकता	20
2	भाषा एवं शैली	20
3	वर्तमान / भावी परिप्रेक्ष्य में पुस्तक की उपयोगिता	20
4	सुव्यवस्थित प्रस्तुति	20
5	संपादन की गुणवत्ता-विधाओं और विषयों की विविधता, सामग्री का चयन, प्रस्तुतीकरण, साज-सज्जा, ले आऊट, पृष्ठ संख्या का इष्टतम उपयोग आदि।	10
6	प्रकाशन की गुणवत्ता-साजसज्जा, गुणवत्ता, छपाई, बाइंडिंग आदि।	10
	कुल अंक	100

नोट-उपरोक्त तालिका में परिवर्तन (घटाया-बढ़ाया) सक्षम स्तर के अनुमोदनोपरान्त किया जा सकता है।

प्रविष्टि भेजने की रीति :

8. (1) प्रविष्टि इन विनियमों के साथ संलग्न प्रपत्र में भेजी जायेगी।
- (2) पुरस्कार के लिये प्रविष्टि की जाने वाली प्रत्येक पुस्तक की तीन प्रतियां भेजनी आवश्यक होंगी, जो प्रत्यावर्तित नहीं की जायेंगी।
- (3) विषय-वस्तु परस्पर भिन्न होने पर एक लेखक विचारार्थ एक से अधिक प्रविष्टियां भेज सकता है।
- (4) प्रविष्टियां निम्न पते पर इस विषय में जारी किए जाने वाले परिपत्र में उल्लिखित अंतिम तारीख तक पहुँच जानी चाहिए:-
(एक) प्रमुख सचिव / सचिव, भाषा विभाग, उत्तराखण्ड सचिवालय देहरादून, अथवा

- (दो) निदेशक, भाषा संस्थान, देहरादून, उत्तराखण्ड।
- (5) इन विनियमों में विहित प्रपत्र में प्रविष्टियां न भेजे जाने पर उन्हें स्वीकार करना संभव नहीं होगा।

मूल्यांकन समिति/चयन समिति :

9. (1) प्रविष्टियों पर एक मूल्यांकन समिति द्वारा विचार किया जायेगा।
(2) प्रविष्टियां भेजने वाले लेखकों के निकट संबंधी मूल्यांकन समिति में सदस्य के रूप में प्रतिभाग नहीं कर सकेंगे। इस आशय का उन्हें स्वहस्तलिखित प्रमाण पत्र देना होगा।
(3) मूल्यांकन समिति को यह अधिकार होगा कि वह किसी पुस्तक के बारे में निर्णय देने से पहले संबंधित विषय के विशेषज्ञ/विशेषज्ञों की राय प्राप्त करें।
(4) मूल्यांकन समिति/चयन समिति मूल्यांकन के मानदंड स्वयं निर्धारित करेगी एवं निर्धारित मानदण्डों से प्रमुख सचिव/सचिव, भाषा विभाग उत्तराखण्ड शासन को अवगत करायेगी।
(5) पुरस्कार देने के बारे में सर्वसम्मति न होने की स्थिति में निर्णय बहुमत द्वारा किया जायेगा। यदि किसी निर्णय के बारे में पक्ष और विपक्ष में बराबर मत हो तो अध्यक्ष को निर्णायक मत देने का अधिकार होगा।
(6) मूल्यांकन समिति/चयन समिति के सरकारी सदस्यों को यात्रा-भत्ता/दैनिक-भत्ता उसी स्रोत से मिलेगा जिस स्रोत से उन्हें वेतन मिलता है। समिति के गैर-सरकारी सदस्य राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किये गये और संबंधित अवधि में लागू अनुदेशों के अधीन एवं नियमावली के अधीन यात्रा-भत्ता और दैनिक-भत्ता पाने के अधिकारी होंगे।

मूल्यांकन समिति/चयन समिति का गठन और उसके कार्य :

10. (1) पुरस्कार निर्धारण के लिए प्रत्येक वर्ष पृथक-पृथक पुरस्कार के लिए तथा प्रत्येक पुरस्कार के लिये एक त्रिसदस्यीय चयन समिति/मूल्यांकन समिति गठित होगी। सदस्यों का चयन पुरस्कार परामर्श मण्डल द्वारा संस्तुत सात नामों के पैनल में से संस्थान के अध्यक्ष करेंगे। पुरस्कार परामर्श मण्डल का गठन अध्यक्ष द्वारा दो अकादमी के कुलपतियों एवं साधारण सभा के नामित साहित्यकारों में से तीन को नामित कर किया जायेगा तथा जिसकी अध्यक्षता, अध्यक्ष, प्रबन्धकार्यकारिणी द्वारा की जायेगी। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्षता प्रबन्धकार्यकारिणी के कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा की जायेगी।

11

- (2) पुरस्कार परामर्श मंडल के सदस्यों द्वारा गठित कराई गयी चयन समितियों/मूल्यांकन समितियों द्वारा संस्तुत प्रत्येक पुस्तक की 5 प्रतियां अकादमी द्वारा क्रय की जायेंगी।
- (3) क्रय की गई पुस्तकों की एक-एक प्रति चयन समिति के प्रत्येक सदस्य एवं संयोजक/अध्यक्ष, कार्यकारिणी समिति को भेजी जायेगी।
- (4) चयन समितियों की बैठक का आयोजन यथासंभव राज्य के मुख्यालय में होगा। प्रबन्धकार्यकारिणी के अध्यक्ष (अध्यक्ष की अनुपस्थिति में कार्यकारी अध्यक्ष बैठक का संयोजक होगा) पुरस्कार परामर्श मंडल का संयोजक बैठक का भी संयोजक होगा। संयोजक सुनिश्चित करेगा/करेगी कि पुरस्कार परामर्श मंडल/चयन समितियों की बैठक में विचार-विमर्श इन नियमों के अनुरूप हो तथा वह मंडल की रिपोर्ट पर प्रतिहस्ताक्षर भी करेगा/करेगी।
- (5) चयन समिति के सदस्य विचार-विमर्श के अनुसार प्रस्तुत पुस्तकों के संदर्भ में अपनी वरीयता सूची उसके समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। वे यह भी अनुशंसा कर सकते हैं कि उनके विचार में उस अवधि के दौरान कोई भी पुस्तक पुरस्कार की पात्र नहीं है। कोई सदस्य यदि किसी कारणवश बैठक में उपस्थित नहीं है, तो चयन समिति की बैठक इसलिये अमान्य नहीं मानी जायेगी कि कोई सदस्य उपस्थित नहीं है या उसने अपनी अनुपस्थिति के संबंध में सूचना लिखित रूप में नहीं भेजी है।
- (6) तत्पश्चात् चयन समिति के सदस्यों से प्राप्त संस्तुतियां प्रबन्धकार्यकारिणी तथा साधारण सभा के समक्ष निर्णय हेतु प्रस्तुत की जायेगी।
- (7) चयन समिति के सदस्यों को वास्तविक यात्रा भत्ते के अतिरिक्त मानदेय आदि के सम्बन्ध में भाषा संस्थान नियमावली के अनुसार निर्णय करेगी।

विविधा :

11. (1) यदि पुरस्कार प्रदान किये जाने के पूर्व किसी पुरस्कार विजेता की मृत्यु हो जाती है तो उस स्थिति में वह पुरस्कार उसके/उसकी पति, पत्नी अथवा किसी कानूनी वारिस को दिया जायेगा।
- (2) यदि इन नियमों में से किसी भी उपबंध के लागू करने में कोई समस्या आती है तो उस स्थिति में भाषा संस्थान की कार्यकारिणी उस समस्या का निवारण नियमानुसार करेगी।

✓

भाषा संस्थान पुरस्कार के लिये पुस्तक के चयन की प्रक्रिया इस प्रकार है :

12. (1) नियम 5 के अन्तर्गत पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले तीन वर्षों में संस्थान (इसके पश्चात् जिसे संस्थान कहा जायेगा) द्वारा लोक भाषा में भारतीय लेखक की प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति के लिये प्रत्येक वर्ष एक पुरस्कार होगा। उदाहरण: 2012 के पुरस्कार के लिये 2008 से 2010 के मध्य प्रकाशित पुस्तकें ही विचारणीय होंगी।
- (2) पुरस्कार वर्ष के पूर्ववर्ती 3 वर्ष में प्रकाशित कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं पाई जाती है तो उस वर्ष उस विधा के लिये पुरस्कार नहीं दिया जायेगा।
- (3) पुरस्कार के रूप में लेखक को उतनी राशि प्रदान की जायेगी जितनी संस्थान समय-समय पर निर्धारित करे। पुरस्कार राशि के अतिरिक्त एक प्रशस्ति पत्र भी प्रकाशित किया जायेगा, जिसमें पुस्तक के वैशिष्ट्य तथा हिन्दी भाषा और साहित्य में लेखक के योगदान की संक्षेप में चर्चा होगी।
- (4) जहाँ दो या अधिक पुस्तकें समान योग्यता की पाई जायेंगी वहाँ पुरस्कार निर्धारण के समय उनके लेखकों के कुल साहित्यिक योगदान और लोक भाषा जगत में उनकी प्रतिष्ठा को भी ध्यान में रखा जायेगा।

आधार-सूची के निर्माण तथा चयन समितियों के सदस्यों की संस्तुतियां प्राप्त करना

13. (1) भाषा संस्थान हर वर्ष प्रत्येक विधा की विचारणीय पुस्तकों की एक आधार सूची वर्णित पुरस्कारों के अन्तर्गत पुरस्कार दिये जाने के उद्देश्य से तैयार करायेगी, जिसका निर्माण कार्य एक विशेषज्ञ अथवा संस्थान के अध्यक्ष के विवेक पर दो विशेषज्ञों को सौंपा जा सकेगा। विशेषज्ञों के मानदेय की राशि समय-समय पर संस्थान द्वारा नियमावलियों के प्राविधानों के अनुरूप नियत की जायेगी।
- (2) गठित पुरस्कार परामर्श मंडल का प्रत्येक सदस्य अधिक से अधिक उपरोक्त पुरस्कारों की विधा हेतु अधिकतम पांच नामों का एक पैनल भेजेगा और संस्थान के प्रबन्धकार्यकारिणी के अध्यक्ष प्रमुख सचिव/सचिव, भाषा एवं निदेशक, भाषा संस्थान के परामर्श (जिन्हें इसके बाद अध्यक्ष कहा जायेगा) इस प्रकार प्राप्त पैनलों में से प्रत्येक पुरस्कार हेतु विशेषज्ञ या विशेषज्ञों का चुनाव करेंगे।
- (3) आधार-सूची तैयार करते समय विशेषज्ञ नियमों में सुनिश्चित विचारणीयता के मानदण्डों का कड़ाई से पालन करेंगे। इस प्रकार निर्मित आधार-सूची जिसमें गत वर्ष संस्तुत कृतियां भी सम्मिलित होंगी तथा इसके पश्चात् लोक भाषा परामर्श मंडल चयन समितियों

(योजक सहित) के सभी सदस्यों को इस अनुरोध के साथ भेजी जायेगी कि वे संस्थान द्वारा निर्धारित तिथि तक दो पुस्तकें अनुमोदित करें। प्रत्येक सदस्य

(क) आधार-सूची से दोनों पुस्तकें अथवा

(ख) एक पुस्तक आधार-सूची से और दूसरी अपनी रुचि से

(ग) दोनों पुस्तकें अपनी रुचि की चुन सकता है।

जूरी और उसके कार्य :

14. (1) चयन समितियों की संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार के अन्तिम चयन हेतु अपना प्रस्ताव प्रबन्धकार्यकारिणी को प्रस्तुत करने हेतु एक त्रिसदस्यीय जूरी विचार करेगी। जूरी के सदस्यों का चयन अध्यक्ष द्वारा किया जायेगा, जिसमें दो सदस्य अन्य प्रदेशों से एवं एक सदस्य का चयन उत्तराखण्ड से किया जायेगा।
- (2) पुरस्कार परामर्श मण्डल द्वारा अनुशांसित पुस्तकें क्य के उपरान्त संस्थान द्वारा जूरी के सदस्यों और संयोजक को भेजेगी।
- (3) संयोजक जूरी और संस्थान के बीच संपर्क सूत्र का काम करेगा। वह यह सुनिश्चित करेगा/करेगी कि जूरी की बैठक उचित और संतोषजनक रूप में सम्पन्न हो। यह जूरी की रिपोर्ट पर प्रतिहस्ताक्षर भी करेगा/करेगी।
- (4) जूरी के सदस्य या तो सर्वसम्मति से अथवा बहुमत से पुरस्कार के लिये एक पुस्तक की अनुशंसा करेंगे। वे ये भी अनुशंसा कर सकेंगे कि उनके विचार में इस वर्ष कोई भी पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।
- (5) जूरी के सदस्यों को वास्तविक यात्रा भत्ते के अतिरिक्त दैनिक भत्ते और बैठक भत्ते का भुगतान ऐसी दर से जैसी कार्यकारी मंडली के सदस्य देते हैं, नियमावली के अनुसार किया जायेगा।

पुरस्कार की घोषणा :

15. (1) जूरी की संस्तुति को औपचारिक अनुमोदन और पुरस्कार की घोषणा के लिये प्रबन्धकार्यकारिणी मण्डल के समक्ष रखा जायेगा।
- (2) पुरस्कार की घोषणा के साथ ही जूरी के सदस्यों के नाम और अन्तिम चरण में चुनी गयी पुस्तकों की सूची भी घोषित कर दी जायेगी।

विविधा :

16. (1) यदि पुरस्कार परामर्श मण्डल के किसी सदस्य या निर्णायक द्वारा संस्तुति भेजने की समय सीमा की अनदेखी की जाती है, संस्थान यह मान लेगा कि उसका/उसकी कोई संस्तुति नहीं है और वह

तदनुसार अपनी पुरस्कार प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगी सिवाय उ विशेष परिस्थिति के जिसमें संस्थान समय-सीमा को बढ़ा पाने के स्थिति में हो तथा वास्तव में उसे बढ़ाती हो।

- (2) प्रबन्धकार्यकारिणी मंडल के निर्णयानुसार पुरस्कार समारोह की तिथि और स्थान निर्धारित किया जायेगा।

पुरस्कार के बारे में घोषणा और पुरस्कार वितरण :

17. (1) पुरस्कार के बारे में निर्णय की सूचना सभी पुरस्कार विजेताओं को पत्र द्वारा भेजी जायेगी।
(2) पुरस्कार वितरण भाषा विभाग द्वारा निर्धारित तिथि को किया जायेगा। पुरस्कार वितरण के लिये नियत स्थान के बाहर से आये हुये पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार ग्रहण करने के लिये यात्रा भत्ता नियमावली के अनुरूप संस्थान द्वारा देय होगा।

सामान्य :

18. (1) पुरस्कृत पुस्तक पर लेखक का कॉपीराइट अधिकार बना रहेगा।
(2) पुरस्कार प्रदान किये जाने अथवा पुरस्कार के लिये पुस्तक चयन की प्रक्रिया के बारे में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा।
(3) जूरी का निर्णय अन्तिम होगा।

विनियम शिथिल करने का अधिकार :

19. जहाँ राज्य सरकार की राय हो कि ऐसा करना आवश्यक या समीचीन है वहाँ वह उसके लिये जो कारण हैं उन्हें लेखबद्ध करके इन विनियमों के किसी उपबंध को आदेश द्वारा शिथिल कर सकेगी।

म
(डी०एस० गव्याल)
सचिव

(लोक भाषा मौलिक लेखन पुरस्कार हेतु)

प्रपत्र

- (1) पुस्तक का नाम.....
- (2) पुस्तक योजना के किस पहलू/विषय के बारे में है.....
- (3) (क) लेखक /लेखकों का नाम.....
(ख) पूरा पता.....
(ग) दूरभाष संख्या.....
- (4) (क) प्रकाशक का नाम.....
(ख) प्रकाशक का पूरा पता.....
(ग) मूल्य.....
(घ) प्रकाशन वर्ष.....
(ड.) कॉपीराइट किसके अधीन है.....
- (5) क्या पुस्तक को पूर्व में किसी अन्य प्रतियोगिताओं में भेजा गया था, यदि हाँ, तो कृपया पूरा ब्यौरा दें :
(क) किस वर्ष में भेजी गई.....
(ख) किसे भेजी गई.....
(पूरा पता).....
(ग) क्या कोई पुरस्कार प्राप्त हुआ है यदि हाँ, तो उसका ब्यौरा दें.
- (6) क्या लेखक को लोक भाषा मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना के अंतर्गत कोई पुरस्कार प्राप्त हुआ है यदि हाँ, तो निम्नलिखित ब्यौरा दें—
(क) पुरस्कार प्राप्त पुस्तक का शीर्षक.....
(ख) वर्ष जिसमें पुरस्कार प्राप्त हुआ.....
(ग) प्राप्त पुरस्कार की राशि.....
(घ) वर्ष जिसमें पुस्तक प्रकाशित हुई.....
(ड.) प्रकाशक का पूरा पता.....
(च) पुस्तक का मूल्य.....
- (7) मैं/हम यह प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ करते हैं कि—
(क) मैं/हम भारतीय नागरिक हूँ/हैं।
(ख) पुस्तक मेरे/हमारे द्वारा मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई है।
(ग) मेरी/हमारी पुस्तक को इस योजना के अंतर्गत प्रविष्ट करने से किसी अन्य व्यक्ति के कॉपीराइट का उल्लंघन नहीं होता है।

मैं/हम वचन देता हूं/देते हैं/देती हूं कि मैं लोक भाषा मौलिक पुस्तक
लेखन पुरस्कार विनियम/हम विनियम के उपबंधो का पालन करूँगा/करूँगी।

लेखक/लेखकों के हस्ताक्षर.....

स्थान:.....
दिनांक:.....

नोट-

- (1) इस प्रपत्र को उचित प्रकार भरकर पुस्तक की तीन प्रतियों सहित
(क) प्रमुख सचिव/सचिव, भाषा विभाग, उत्तराखण्ड सचिवालय, देहरादून।
(ख) निदेशक, भाषा संस्थान उत्तराखण्ड को भेजा जाये।
- (2) लेखक द्वारा पुस्तक का विधिवत् हस्ताक्षरित विषय वस्तु का सारांश
भी संलग्न किया जाये।

(डी०एस०) ^{मेर्या} गर्वाल
सचिव